राष्ट्र का भविष्य युवा हाथों में: डा. हिरानी

सीएसआईआर-सीएमईआरआइ में जलशोधन पर जिज्ञासा कार्यक्रम

बच्चों की जिज्ञासा का जवाब देते निदेशक डा. हिरानी व अन्य। छाया: अभय गिरि

दुर्गापुर। सीएसआईआर-सीएमईआरआई, दुर्गापुर ने आज जिज्ञासा कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें केन्द्रीय विद्यालय आसनसोल, बर्दवान, चित्तरंजन और सीएमईआरआई के लगभग 200 छात्रों व शिक्षकों ने भाग लिया। अध्यक्षता सीएमईआरआई के निदेशक डा. हरीश हिरानी ने की। कार्यक्रम का विषय जलशोधन तकनीक था। सभी भाग लेने वाले छात्रों को जल शोधन के विभिन्न पहलुओं के बारे में अवगत कराया गया। डा. हिरानीने दूषित पानी और इसके स्त्रोतों के कई गुना प्रभाव के बारे में विस्तार से बताया। उन्होने कहा कि जल प्रदूषण और इसके खतरे का समाज की पारिस्थितिकी एवं स्वास्थ्य-प्रोफाइल पर दूरगामी प्रभाव पड़ता है। इस समस्या का सबसे चुनौतीपूर्ण हिस्सा आर्सेनिक, आयरन और फ्लोराइड के प्रदूषण से प्रभावी ढंग से निपटना है। इसका सामना करने के लिए शस्त्रागार लागत प्रभावी और पारिस्थितिक रूप से सुरक्षित फिल्टर कारतूस और फिल्टर माध्यमों का विकास है। ये निस्पंदन तंत्र आसन्न बड़े वैश्विक पीने योग्य जल-संकट परिदृश्य को संबोधित करने में भी मदद करेंगे। सीएमईआरआई द्वारा विक. सित जल शोधन तकनीकें आर्सेनिक,फ्लोराइड और पैथोजेन्स से निपटने के दौरान नो-एनर्जी, केमिकल-फ्री, कार्टिज और उत्पाद के सुरक्षित निपटान, आसान संचालन व लागत, प्रभावशीलता के पहलुओं को समाहित करने की कोशिश करती है। डा. हिरानी ने उपस्थित युवाओं से बड़े पैमाने पर सोसाइटी के साथ जुड़ने और विज्ञान व प्रौद्योगिकी जागरूकता का संदेशवाहक होने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि विज्ञान सब कुछ कर सकता है और यह स्वच्छ, हरित व स्वस्थ भारत विकसित करने के लिए वैज्ञानिक कौशल को प्रमाणित करने के लिए सीएमईआरआई का संस्थागत दर्शन है। शिक्षकों से आग्रह किया गया कि वे छात्रों की जिज्ञासा को एक दृष्टि और दिशा दें तथा उनके दिमाग को वास्तविक जीवन की स्थितियों में संलग्न करें। इस तरह की जिज्ञासा और जागरूकता अंतत: महान भारत को जन्म देगी। राष्ट्र का भविष्य और प्रगति इन जिज्ञासु युवा मन के हाथों में है। इंटरैक्टिव सत्र के दौरान छात्रों ने दिलचस्प और आकर्षक विषय के लिए प्रशंसा और उत्सुकता व्यक्त की। छात्रों ने डा. हरीश हिरानी और उनके वैज्ञानिकों डा. बी रुज, डा. एन चंदा, डा. पी बनर्जी, डा. डी बनर्जी और डा. पीएस बनर्जी के साथ बातचीत भी की।

केन्द्रीय विद्यालयों के 200 बच्चों-शिक्षकों ने लिया हिस्सा